ISSN 2249-829X

संस्कृति-सौरभम् शोध पत्रिका

प्रकाशक

संस्कार–भारती मानव कल्याण संस्थान जयपुर (राज.)

बी–23, भूरापटेल नगर, पोस्ट–हीरापुरा, अजमेर रोड़, जयपुर (राज.) 302021

E-mail : sanskritisaurabham@gmail.com, sbmksj2001@gmail.com

Scanned with CamScanner

प्रकाशन वर्ष–जुलाई से दिसम्बर 2016
अङ्क - अष्टम्

RNI No. - RAJBIL/2013/49485
Reg. No.-ISSN 2249-829X

संस्कृति–सौरभम् शोध पत्रिका

(National Research Journal)

अर्द्धवार्षिक पत्रिका

(हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित लेख)

प्रधान सम्पादक

डॉ. एल. एन. शास्त्री

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (न्याय-विभाग)

राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, गांधी नगर, जयपुर

सम्पादक

डॉ. उमेश प्रसाद दाश *(उपाचार्य वेद-विभाग)*

राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, गांधी नगर, जयपुर

निदेशक

रवि शर्मा

(संस्कृति सौरभम् शोध पत्रिका)

प्रकाशक

संस्कार-भारती मानव कल्याण संस्थान जयपुर (राज.)

बी-23, भूरा पटेल नगर, पो.-हीरापुरा, अजमेर रोड़, जयपुर-302 021

दूरभाष :- +91-9414228995, 9785470992, 7726077165, 9414279715

E-mail : sanskritisaurabham@gmail.com, sbmksj2001@gmail.com

सदस्यता शुल्क - पञ्चवर्षीय 1300/- रू. स्थायी शुल्क 2100/- रू. उक्त राशि निदेशक-संस्कृति सौरभम् शोध पत्रिका के नाम नगद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित करें। पत्रिका का खाता पंजाब नेशनल बैंक, न्यू सांगानेर रोड़, सोडाला शाखा, जयपुर खाता सं. 4087000100105336, *एवं* IFC Code PUNB0408700 *है।*

स्वामी - संस्कार भारती मानव कल्याण संस्थान, जयपुर *के लिए प्रकाशक व मुद्रक* रवि शर्मा *द्वारा* लक्ष्मी प्रिन्टर्स , *888, खण्डार का रास्ता, चार दरवाजा, जयपुर (राज.) से मुद्रित हुआ है।*

Scanned with CamScanner

सुभाषचरितम् महाकाव्य में मानवेतर पात्र

सुभाषचन्द्र बोस एक महान् नायक, विवेकी और महान् सुवक्ता थे। जितने किशोर वहाँ उपस्थित थे वे हिमालय की शिलाओं से निकली हई वाणी के समान उनकी उस उपदेशात्मक वाणी को तदनुसार देशहितार्थ कार्य करने के लिए तत्पर हुए। हिमालय पर्वत, बाघ, सिंह, भालु, भयंकर हाथी पिक, विचित्र शुक, सारिकाओं से कुंजित, तालाब, नदियाँ, वनस्पतियाँ, चन्द्रमा, पक्षी, गङ्गा, यमुना, सरस्वती रखा आदि।

ईयेषु सोढुं सकला विपन्नतां हिमालयोऽपि स्थितिमात्मासिद्धये।
विचार्य चैवं निजराष्ट्रसेवनं पुनश्च तत्याज गृहं स्वकीयकम् ॥

उन्होंने लक्ष्य-सिद्धि के लिए हिमालय पर्वत पर भी जाकर आत्मसिद्धि के विषय में विचार कर ही अपने राष्ट्र की सेवा के लिए उन्होंने अपने गृह का त्याग किया।

व्याघ्रादिसंसेवित भमिदुस्तरेत तथैव सिहेरपि तत्र संस्थितै।
भल्लूकजम्बूकमृगैरधिष्ठति निर्भिकभावे विचचार तद्वने ॥[1]

बाघ, सिंह, भालू, शृगाल आदि पशुओं से सेवित उस (हिमालय में स्थित) वन में वे निर्भीक भाव से विचरण करने लगे। भंयकर हाथी, पिक आदि अन्य पक्षियों तथा विचित्र शुक और सारिकाओं से कूजित उस वनप्रान्त में विचरणं करते हुए वे अत्यन्त आनन्दित हुए। महान् साधक वे (सुभाष) लम्बी जटाओं वाले अत्यन्त भक्ति में लीन पूजक साधुओं से सुशोभित उस वन में उन महात्माओं के साथ अत्यन्त विनम्र भाव से रहने लगे। **"आखिर सुभाष सकारात्मक चला कहाँ गया?"** माँ ने अपने आप से सोचा और धीरे-धीरे सुभाष की मेज के निकट आई। उसने देखा कि चीटियों की एक लम्बी, काली कतार सुभाष की मेज से होती हुई उसकी पुस्तकों की आलमारी की ओर जा रही है।

दशाधिके सप्तगते प्रकृष्टता-मवाप्य वर्षे तपसा हिमालये।
विचारयामास वने वसन्नसौ न कामना स्वर्गपरा भवेद्धि नः ॥[2]

सत्रहवर्ष की अवस्था में हिमालय पर तपस्या में उन्होंने प्रकृष्टता तो प्राप्त की, किन्तु उस वन में निवास करते हुए उन्होंने विचार किया कि हमारा कामना स्वर्ग-प्राप्ति नहीं होनी चाहिए। युग, देश तथा सब ओर की चीत्कारमय पुकार सुनकर अत्यन्त कष्ट में पड़कर वे नेता पूर्णतः विचार करके हिमालय से शान्ति प्राप्त कर लौट आये। महापराक्रमी (श्रीसुभाष) ने विचार किया कि सात समुद्र पर से आकर ये पिशाचरूपी विदेशी यहाँ शासन करते है। अतः सब प्रकार से इनका विरोध अत्यन्त आवश्यक है। क्षितिज के पार तथा नदियों और वनस्पतियों के पार हम लोगो के सपनो को स्वर्णिम देश भारत है जो जगत् में प्रसिद्ध हमारी मनोहर जन्म भूमि है।

Scanned with CamScanner

संसारमध्ये सुमहान हि देशः सर्वाधिकः सुन्दरभूत एषः।
चन्द्रस्तु तत्रातिविशिष्टरूपे प्रकाशते पूर्णसुशोभितश्च ॥[3]

इस संसार में सर्वाधिक सुन्दर हमारा महान् देश है जहाँ चन्द्रमा अत्यन्त प्रकाशयुक्त हो शोभता है।

कुजन्ति शाखासु खगास्तुरूणां स्वरे च माधुर्ययुते सुरम्ये।
व्रजन्ति यस्मिन्मुनयो तपांसि तप्त्वा स्वयं गुप्तरहस्ययापु ॥

उसके वृक्षो की डालो पर पक्षी माधुयक्त लोभनीय स्वर में कूजते है। वही तपस्या कर मुनियों ने गुप्त रहस्यो का पता लगाया है। वास्तव में मै सत्य की खोज करने के लिए दूर-दूर भटका। वह सत्य वन, कन्दराओ, गुफाओं और धर्म-संस्थानों में नहीं। वह सत्य तो समाज, मनुष्य और कण-कण में विद्यमान है और हमें उन्हीं के बीच खोजता है। नेताजी ने रानी झांसी रेजिमेंट को दो कम्पनियों को युद्ध क्षेत्र में जाने का हुक्म दे दिया। साथी ही उन्हें यह भी आगाह कर दिया कि युद्ध क्षेत्र पहाड़ी और पतले दर्रों से भरपुर था। भोजन, कपड़े और अस्त्र-शास्त्र की कमी थी, इस नदी, वन, जंगलो के हरे भू-भाग के शैल-शिखर और नदी झरनों के उस पार हमारी जन्मभूमि है।

स्वस्वप्नदेशः क्षितिजस्य पारे पारे नदीनां च वनस्थलीनाम्।
सवर्णभूमिः जगाति प्रसिद्धाः मनोहरा भारतजनमभूमि ॥[4]

हमारा बस एक ही लक्ष्य है, **''भारत की आजादी''** हमारा एक ही नारा होगा – **''करो या मरो''** और हमारी फौज एक चट्टान की तरह आगे बढ़ेगी।

पारे नदीनां क्षितिजस्य पारे पारे च श्रृङ्गस्य नगराधिपानाम्।
धरातलं यत्र सुरा ह्यापि स्वं स्वर्ग परित्यज्य समगताश्च ॥[5]

क्षितिज के उस पार, नदियों और पव्रत श्रेणियों के भी पार वह धरातल है जहाँ देवता अपने स्वर्ग स्थित निवास को छोड़कर अवतरित हुए थे। जिस प्रकार पक्षी नीड़ विहिन होकर अर्थात उससे अलग होकर विशाल आकाश में उड़ता चलता है, उसी प्रकार हम लोग आज अपनी मातृभूमि से दूर अत्यन्त हीन भाव से भटक ही रहे है।

प्रो. अर्चना दुबे
श्रीसोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय
राजेन्द्र भुवन रोड़, वेरावल, जिला गीर- सोमनाथ (गुजरात) 362265

सन्दर्भ –

1. सुभाषचन्द्र चरितम् 217, पृ. सं. 14
2. सुभाषचन्द्र चरितम् 2/12, पृ. सं. 16
3. सुभाषचन्द्र चरितम् 11/5, पृ. सं. 135
4. सुभाषचन्द्र चरितम् 11/3, पृ. सं. 135
5. सुभाषचन्द्र चरितम् 217, पृ. सं. 14

Scanned with CamScanner